रिकॉर्ड :– छोड़ भी दे आकाश सिंहासन.... ॐ पिताश्री 6/3/63
ओऽम् शांति। देखो, यह श्लोक है श्रीमत भगवत गीता का। अब भक्त बुलाते हैं भगवान को। बुलाते ही रहते हैं; क्योंकि भगवान को याद तो करना ही भक्तों को। दूसरा कोई भी धर्म स्थापन करने वाला नहीं, जिसको कोई ऐसे बैठ बुलावे। यह कौन बुलाते हैं? भारतवासी भक्त। श्लोक है गीता का। और वेद,शास्त्र,उपनिषद,महाभारत जो भी हैं, कोई में भी ऐसा श्लोक न है कि यदा यदा हि... गीता का नाम ही जैसे माता का नाम है। रामायण,महाभारत,वेद,उपनिषद जैसे मेल्स के नाम हैं। गीता है फिमेल्स का नाम। तो ज़रूर उनका रचियता भी चाहिए। इससे सिद्ध होता है गीता माता है। उनको जन्म देने वाला ज़रूर प०पि०प० है, जिसको बुलाते हैं कि आकर हमको फिर से सहज राजयोग और ज्ञान सिखाओ, जिसका नाम गीता रखा गया है। कहते हैं, फिर से आए गीता का राज़ समझाओ अर्थात् सहज राजयोग सिखाओ। अब गीता माता का पिता है प०पि०प० शिव, कोई मनुष्य नहीं। उनको कहते हैं कि रूप बदल आओ। आत्मा तो रूप बदलती रहती है। आज यह शरीर है, कल दूसरा शरीर ले और पार्ट बजाना होगा। तो आत्मा शरीर छोड़ वो रूप बदलाए देगी। मनुष्य अक्सर करके देह को ही याद करते हैं; परन्तु फिर भी उनकी आत्मा को बुलाया जाता है। शरीर तो खत्म हो गया। वो आ न सके। वास्तव में बुलाया जाता है निराकार को। कोई चाहते हैं, हमको संतान चाहिए तो भी आत्मा को आना है। फिर परमधाम से आए अथवा एक शरीर छोड़ दूसरा आए ले, रूप बदलना है। भगवान को तो कहा जाता है जन्म–मरण रहित। वो अवतार लेते हैं। फिर से आना पड़ता है; क्योंकि माया का बहुत परछावा हो गया है अर्थात् रावण राज्य हो गया है। वो आवेंगे भी तब जब सृष्टि तमोप्रधान, पुरानी हो। बाप कहते हैं, मैं पहले तो आ नहीं सकता हूँ। भल द्वापर से लेकर भक्ति शुरू होती है; परन्तु मुझे आना तब है जब भक्ति का अंत हो। अर्थात् कलियुग पूरा हो, सतयुग की आदि होनी है। इसको कहा जाता है संगम। मोस्ट कल्याणकारी ऑस्पिशस युग। तो बाप को आना ही है बच्चों को वर्सा देने। उनको सब याद करते हैं; क्योंकि उनकी याद अविनाशी हो जाती है भक्तिमार्ग में। बाबा ने समझाया है, सदैव कोई सुखी रह नहीं सकता। सदैव सतोप्रधान जीवनमुक्त हो अर्थात् सदैव ब्रह्मा का दिन हो न सके। दिन के बाद रात अर्थात् भक्ति ज़रूर होनी है। खेल ही है ज्ञान और भक्ति, दिन और रात का। तो यह है सर्व शास्त्रमई शिरोमणि गीता माँ–बाप। उनसे फिर और शास्त्र जन्म लेते हैं। पहले–2 है गीता, फिर बाद में इस्लामी, बौद्धी, क्रिश्चियन धर्मों के शास्त्र निकलते हैं। धर्म भी ऐसे हैं। पहले देवी–देवता धर्म, फिर नम्बरवार और धर्म निकलते हैं। सूर्यवंशी और चंद्रवंशी तो एक ही गिना जाता है। देवताएँ ही फिर चंद्रवंशी में आते हैं। फिर भी देवताओं और क्षत्रियों में फर्क रखा हुआ है। वो 16 कला सम्पूर्ण, वो 14 कला सम्पूर्ण। तो गीता है सबसे ऊँच, पहले नम्बर का शास्त्र। उनसे फिर वृद्धि होती है। हरेक का वंश होता है ना। देवी–देवता वंश के बाद वैराइटी धर्मों का वंश है। क्षत्रिय तो उनसे आ जा(ते) हैं। तो इस्लामी, बौद्धी आदि धर्म (निकले) देवता धर्म से। पहले–2 ऊँच कुल देवताओं का है। फिर दो ग्रेड कम चंद्रवंशी का। बाप समझाते हैं, देवता और क्षत्रिय दोनों धर्म मैं ही स्थापन कर रहा हूँ। यह सारी नॉलेज आत्मा ही ग्रहण करती है। लव भी आत्मा से होना चाहिए, जो आत्मा अमर है। मनुष्य विनाशी होने वाले शरीर से लव रखते हैं तो दुखी होते हैं। सतयुग में शरीर से कब मोह नहीं रखते। वहाँ निर्मोही आत्मा रहती है। कोई भी मरे(गा), मोह न होगा। नाम ही है निर्मोही राजा। एक शरीर छोड़ दूसरा लेना ही है। फिर दुख करने की तो बात ही नहीं। वहाँ आत्मा को शरीर का मोह नहीं रहता। सोल कॉन्शस हो रहते हैं। आत्मा का

ज्ञान है। यहाँ तो न आत्मा का, न प० का ज्ञान है। वहाँ समझाते हैं– हम आत्मा हैं, यह ड्रामा है, हरेक को पार्ट मिला हुआ है। मनुष्य तो कह देते, 84 लाख जन्म हैं; परन्तु इतने जन्म तो याद भी न रह सके। 84 जन्म लेते हैं तो ज़रूर पार्ट वो ही बजावेंगे जो कल्प–2 बजाते हैं। आत्मा अविनाशी है, उनमें पार्ट भरा हुआ है। यह ज्ञान अभी है तब सुनाते हैं। मुझ आत्मा को बाप ने समझाया है कि तुम 84 जन्म लेते। तुमको वो ही पार्ट बजाना है जो कल्प–2 बजाया है। ब(रोबर) एक शरीर छोड़ दूसरा लिया, ऐसे करते–2 अब यह अंतिम चौरासीवाँ जन्म है। यह है मरजीवा जन्म; क्योंकि प०पि०प० ने हमको एडॉप्टेड किया है। वो धर्मराज भी है। हम उनका धर्म का बच्चा बना हूँ। एडॉप्टेड चिल्ड्रेन हूँ। बाप समझाते हैं, माया ने तुम्हारी बेड़ी डुबो दी है। वो सत्य ना० की कथा सुनाते हैं ना। अभी तो यह बेहद (की) बात है। हमारी आत्मा कहती है, माया ने बेड़ा डुबो दिया है। अभी याद आया, हमने 84 जन्म लिया है। आत्मा एक शरीर छोड़ दूसरा लेती आई है। सतयुग में अकाले मृत्यु होता नहीं है। जानते हैं, बस एक शरीर छोड़ दूसरा लेंगे। ज़रूर प्रिंस घराने में ही जन्म लेंगे। बाप बैठ नर से ना० बनने की कथा सुनाते हैं। (वो) गीता है माता–पिता, जिससे ही और शास्त्र जन्म लेते हैं। वैसे ही कुल भी जन्म लेते हैं। पहले–2 हैं ब्राह्मण कुल, फिर देवता कुल, फिर इस्लामी, बौद्धी कुल, फिर छोटे–2 डार–टार बहुत निकलते हैं। अब बेहद का बाप समझाते हैं– बच्चे, अब मुझे याद करो; क्योंकि अब यह नाटक पूरा हुआ है। कितना वंडरफुल राज़ बाप समझाते हैं। कितनी आत्माएँ हैं! सब अविनाशी हैं। उनकी गिनती नहीं कर सकते। कोई भी शास्त्र में यह नहीं है कि कितने मनुष्यों का इस ड्रामा में पार्ट है। बहुत है ना! और धर्मों में कनवर्ट हो जाते हैं तो पता नहीं पड़ता। अंदाज निकालते हैं, 4–4½ सौ करोड़ हैं। सब अविनाशी आत्माएँ हैं। शरीर तो बदलता ही है। 4½ सौ करोड़ आत्माओं (को) अपना–2 पार्ट मिला हुआ है। इनका ही पूरा हिसाब नहीं निकाल सकते हैं तो अगर 84 लाख जन्म हों तो फिर कैसे निकाले! कौन बैठ हिसाब करे! किसकी बुद्धि में बैठ न सकता। इसलिए सबकी बुद्धि मूँझी हुई है। अभी बाप ने बुद्धि का ताला खोल दिया है। समझते हैं, यह तो अनगिनत हैं। बीज और यह उनका धुर है। फिर उनसे तीन फाउंडेन निकलते हैं। फिर छोटे–2 मठ–पंथ कितना वृद्धि होती है। इसलिए बड़ के झाड़ का मिसाल देते हैं। और कोई झाड़ की इतनी शाखाएँ नहीं होतीं। तो जैसे कि बच्चों को बाप ने आकर सृष्टि के आदि–मध्य–अंत का राज़ समझाया है, जो धारण करना चाहिए। माई–बाप तो है ही एक गीता और उसमें ही भगवानुवाच्य है। बाप भगवान है, जो स्वर्ग की स्थापना करते हैं। स्वर्ग की स्थापना करने वाले को ही क्रियेटर कहा जाता। जो स्वर्ग में राज्य करते उनको क्रियेटर नहीं कहेंगे। उन देवी–देवताओं को कोई ने क्रियेट किया। कैसे क्रियेट करते हैं सो तुम बच्चे जानते हो। सतयुग में तो है ही देवताएँ। नई सृष्टि में इतनी नई राजधानी कैसे और कहाँ स्थापन की? बाप बैठ समझाते हैं, संगमयुग पर मैं आकर ट्रांसफर करता हूँ। कैसे? सो तो तुम बच्चे जानते हो। मनुष्य कहते, विकार बिगर रचना हो नहीं सकती। ... विकार बिगर रचना (होती) है तब तो ....को स्वर्ग वाइसलेंस वर्ल्ड कहा जाता है। बाप कहते हैं, विख छोड़ो। स्वर्ग में यह वि(ख) नहीं मिलेंगे। गाया भी हुआ है– अमृत छोड़ विख काहे को खाए। वो है ही सम्पूर्ण निर्विकारी दुनिया। मनुष्य समझते, बच्चा विख से पैदा होगा, तो एतबार कैसे करे? यह तो अनुभवी ही ब(तावे)। बाप कहते हैं, वो है ही निर्विकारी दुनिया। मैं कहता हूँ, काम महाशत्रु है, उनपर जीत पाने से तुम जगत(जीत) बनेंगे। राम और रावण गाए जाते हैं। राम राज्य में माया रावण होती नहीं। यह बात (धारण करनी है)। सबके पास पूरी धारणा नहीं होती। बुद्धियोग पूरा न है; इसलिए ताला नहीं खुलता, विकार छोड़ते नहीं। एक विकार छोड़ते तो दूसरा विकार पकड़ लेता। मोह भी कम नहीं है। जब हम

बाप के बन गए तो पुरानी दुनिया से मर गए, फिर उनमें मोह क्यों रखना चाहिए? सबसे जास्ती मोह होता है बन्दरी में। बन्दर में इतना नहीं जितना बन्दरी में होता है; क्योंकि माता पालन करती है तो उनका मोह रहता है। (बन्दरों का मिसाल) बाबा कहते– बच्चे, और संग तोड़ मुझ संग जोड़। वचन भी देते हैं– बाबा, मैं तुम्हारी हूँ। फिर बुद्धियोग बाहर जाता है तो धारणा नहीं होती। बाबा का बनकर पाप करते रहते। बाबा कहते, हमको तो पवित्र बुद्धि चाहिए। मेरे को याद करने से ही तुम पवित्र बनेंगे, धारणा होगी। और को याद किया तो बुद्धि का ताला बंद हो जावेगा। अच्छे–2 बच्चों का भी ताला बंद हो जाता है। कोई गुप्त अवज्ञा कर लेते हैं। समझते हैं, बाबा को पता नहीं पड़ेगा; परन्तु शिवबाबा तो सब कुछ जानता है ना। तो बाबा समझाते हैं, माम् एकम याद करो। ऐसे समझो, तुम शिवबाबा पास बैठे हो। भल सदैव मैं इनमें नहीं रहता हूँ; परन्तु तुमको ऐसे समझना है, इनमें दो आत्माओं का पार्ट है। हमको याद शिवबाबा को करना है, इनके शरीर को नहीं। शरीर की याद भूल जानी है। तुम मेरे बने हो तो मेरे को याद करने का पुरुषार्थ करो। बस, मेहनत है ही इसमें। शरीर तो खत्म हो जाता है। आत्मा दूसरा शरीर ले लेती है। शरीर को याद कर आत्मा को बुलाया जाता है। कनेक्शन आत्मा का है। कहेंगे, आत्मा को बुलाओ, आत्मा को खिलाओ, बाप की आत्मा को बुलाओ। बाप भी कहते हैं, मैं जब सज़ा देता हूँ तो आत्मा को स्थूल शरीर धारण कराये सज़ा देता हूँ। तब तो आत्मा को दुख फील होगा, नहीं तो भासना कैसे आए! तो मुख्य है एक गीता। बाकी सब शास्त्र रचना है। वर्सा मिलता ही है माँ–बाप से। बाप कहते हैं, तुम झूठे शास्त्र पढ़ते आए हो; परन्तु इनसे मैं नहीं मिलता। जब मैं खुद आकर समझाऊँ, ज्ञान दूँ, तब है बात। शास्त्रों से भी कुछ नहीं मिलता। अभी हम सबको दान देते हैं। गीता के ज्ञान से सबको मुक्तिधाम का दान दे रहे हैं। बाबा दान देना सिखाते हैं। कहते हैं, माया से मुक्त होना है तो मुझे याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। और कोई उपाय नहीं। सबको वापस जाना भी अंत में है। पहले तो सबको पुनर्जन्म लेना ही है। यह रसम शुरू से ही चली आती है। 84 जन्म सबको लेने ही हैं। इनसे हम छूट नहीं सकते। पार्ट बजाना ही है। तो बाबा सब राज़ बतलाते हैं। तो भगवान के उच्चारी हुई शिरोमणि भगवत गीता माता है। और कोई शास्त्र का ऐसा नाम (है) नहीं। तुम मात–पिता..... माता गीता, पिता बैठ सुनाते हैं। उसका नाम रखा है गीता। यह बहुत गुह्य राज़ है। निवृत्तिमार्ग वाले गीता सुना न सके। यह है प्रवृत्तिमार्ग का शास्त्र। इसमें मात–पिता दोनों को पवित्र रहना है। वो सन्यासी लोग वैराग्य दिला फिर 5 विकारों पर जीत पहनाते हैं; परन्तु फिर भी गुप्त पाप करते हैं। ...नको भी पता नहीं पड़ता है। ईश्वर सर्वव्यापी कहना भी बड़ा गुप्त पाप है। इतना बड़ा पाप करते जो प०पि०प० से विमुख कर देते हैं। तब बाप कहते हैं, इन सबको छोड़ो। यह सब झूठ बोल मेरे से विमुख करते हैं। झूठ बोलना पाप करना है। सच बोलना है पुण्य। दुनिया थोड़े ही समझती कि यह पाप आत्मा है। वो तो बहुत मान देते हैं। इन्होंने तो यह वेद–शास्त्र आदि सुनाए ग्लानि कर दी है। अब तुम बच्चों को बाप ने अथॉरिटी दी है। कोई भी (कुछ कह) न सके। मनुष्य मूँझते हैं, यह क्या लिखा है– गीता भी झूठी, नॉवेल भी झूठे। हम सिद्ध कर बताते हैं। ऐसे और कोई मनुष्य कह न सके। हम हैं सारी दुनिया के बरखिलाफ। वो कहते, कृष्ण भगवानुवाच; हम कहते, शिव भगवानुवाच। आखरीन इन बातों का खुलासा होना है। तुमको इन सब पर जीत पानी है। तुमको इन(का गुरु) बनना है। यह बातें बुद्धि में रखने से बेड़ा प....

.....बाप ज्ञान का सागर, आनंद का सागर है। .....
.....के लिए अपने संस्कार .....जाते हैं। इस समय हम ऐसे कर्म बनाते हैं जो 21 जन्म उसकी प्रालब्ध भोगते हैं। वहाँ यह बातें ही न होंगी। गाया हुआ है, 21 पीढ़ी सदा सुख का वर्सा मिलता है; और फिर गाया भी हुआ है, कुमारी वो जो 21 कुल का उद्धार करे अर्थात् 21 जन्म। अपन जानते हैं, कितनों का उद्धार होता है। कन्याओं की कितनी पूजा है भारत में। वो ही कन्या फिर माता बनती है। यहाँ उनका मंदिर भी एक्युरेट बना हुआ है। जगदम्बा, जगतपिता, शिव कुमारी, कन्या, अधर कन्या सब यहाँ हैं। सबका इकट्ठा मंदिर है। ज़रूर इकट्ठा आए होंगे। आदिनाथ भी ज़रूर बना होगा, जिसका यादगार है। हम सब जानते हैं। बाबा बार–2 कहते हैं, वहाँ दिलवाड़ा में जाकर कोई बच्चा लाइब्रेरी अथवा दुकान खोले; परन्तु ऐसा कोई सुजान बच्चा नहीं है, जो यह काम कर दिखावे। बाप की डायरैक्शन को अमल में लाने की कोशिश नहीं करते हैं। समझाने की बड़ी युक्ति चाहिए। कलेक्टर को जाकर समझाना चाहिए, हम इस दिलवाड़ा मंदिर का सारा राज़ समझावेंगे। हम हरेक का ऑक्युपेशन बतला सकते हैं– यह आदिदेव, जगदम्बा, कुमारी कन्या, अधर कन्या आदि कौन हैं। ..... हम सबको रोशनी देंगे। बिचारे मनुष्य सिर्फ अंधश्रद्धा से माथा झुकाते रहते हैं, समझते कुछ नहीं हैं। बाबा ने सिर्फ तुम बच्चों को; परन्तु सब सेन्टर्स के बच्चों को कहते हैं कि कोई बच्चा यह काम करके दिखावे। अब सीजन का समय आता है। यहाँ के मैनेजर को भी समझा सकते हैं। यह दिलवाड़ा मंदिर सबसे अच्छा है। यहाँ बहुत ही गुजराती और जैनी लोग आते हैं। कोई बच्चे में (भी) बुद्धि नहीं जो कलेक्टर को जाकर समझावे। कहाँ से भी कोई बच्चा आवे, यह काम करे, तो अच्छा होगा। इस समय दुकान भी बहुत मिल सकते हैं। बाबा तो बहुत समय से कहता रहता है; परन्तु सुनने वाला कोई नहीं। तब बाबा कहते, दिल पसंद बच्चा कोई दिल पर चढ़ा हुआ नहीं। समझाना चाहिए– अरे, हम भारत का कल्याण करने लिए यह समझाना चाहते हैं। हमको जमीन का टुकड़ा नहीं मिलता। हम वामन अवतार हैं। सारी दुनिया का राज्य लेने ..... है। यहाँ समझाने लिए भी कोई अच्छी बच्ची को बिठाना होगा। बच्चों को काम करके दिखाना है। सर्विस करे, सेन्टर संभाल दिखलावे, बाबा कहें– सर्विस काबिल है। यहाँ दिलवाड़ा में दुकान खुल जावे तो बहुत खुश हो। त्वमेव माता च पिता, त्वमेव बन्धु च सखा त्वमेव– यह तो ज़रूर बाप को ही कहा जावेगा। कृष्ण बच्चे को कैसे कहा जावेगा! यह भी कोई नहीं जानते। बाप ही सब रूप धरते हैं, बच्चा थोड़े ही धरेंगे। शिवबाबा सब रूप धरते हैं। शिवबालक भी कहते हैं ना! शिव पर माखन,दूध,घी चढ़ाते हैं। यह सब बातें अभी समझ में आती हैं। अच्छा, बच्चों को गुडमॉर्निंग। ॐ

बापदादा और लकी ज्ञान सितारों का सभी सेन्टर्स के सौभाग्यशाली ब्रह्मा मुखवंशावली फूलों–कलियों को होली के पर्व पर मुबारक। यूँ बच्चों की होली तो रोज़ होती है, आत्मा को ज्ञान से पवित्र बनाय रहे हैं योगबल और ज्ञान गुलाल साथ। अच्छा, विदाई

..... जहाँ रहती है वहाँ का टैलीफोन नम्बर 41051 है।